


---

# Parvati Vallabha Nilakantha Ashtakam

——  
पार्वतीवल्लभनीलकण्ठष्टकम्

——  
Document Information



---

Text title : Parvativallabha Nilakantha Ashtakam

File name : pArvatIvallabhanIlakaMThAShTakam.itx

Category : shiva, aShTaka

Location : doc\_shiva

Proofread by : NA, PSA Easwaran

Latest update : February 16, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---


Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

February 17, 2024

*sanskritdocuments.org*

---



---

## Parvati Vallabha Nilakantha Ashtakam

---

### पार्वतीवल्लभनीलकण्ठकम्

---



नमो भूतनाथं नमो देवदेवं

नमः कालकालं नमो द्विव्यतेजः । (द्विव्यतेजम्)

नमः कामभस्मं नमश्शान्तशीलं

भजे पार्वतीवल्लभं नीलकण्ठम् ॥ १ ॥

सदा तीर्थसिद्धं सदा भक्तरक्षं

सदा शैवपूज्यं सदा शुभ्रभस्मम् ।

सदा ध्यानयुक्तं सदा ज्ञानतल्पं

भजे पार्वतीवल्लभं नीलकण्ठम् ॥ २ ॥

श्मशाने शयानं मडास्थानवासं (श्मशानं भयानं)

शरीरं गजानं सदा यर्भवेष्टम् ।

पिशाचादिनाथं पशूनां प्रतिष्ठे (पिशाचं निशोचं पशूनां)

भजे पार्वतीवल्लभं नीलकण्ठम् ॥ ३ ॥

कृष्णीनागकण्ठे भुजङ्गाधनेकं (कृष्णीनागकण्ठं, भुजङ्गाङ्गाभूषं)

गले रुण्डमालं मडावीर शूरम् ।

कटिव्याघ्रयर्भं त्रितामस्मलेपं

भजे पार्वतीवल्लभं नीलकण्ठम् ॥ ४ ॥

शिरश्शुद्धगङ्गा शिवावामभागं

भृङ्गीर्घकेशं सदा मां त्रिनेत्रम् । (विद्यदीर्घकेशं, भृङ्गद्विव्यकेशं सलोभं)

कृष्णीनागकर्णं सदा भालयन्द्रं (भालयन्द्रं)

भजे पार्वतीवल्लभं नीलकण्ठम् ॥ ५ ॥

करे शूलधारं मडाकष्टनाशं

सुरेशं परेशं मडेशं जनेशम् । (वरेशं मडेशं)

धनेशस्तुतेशं ध्वजेशं गिरीशं (धने चारु ठशं, धनेशस्य मित्रं)

भजे पार्वतीवल्लभं नीलकण्ठम् ॥ ६ ॥

उदानं सुदासं सुकैलासवासं (उदासं)  
धरा निर्धरं संस्थितं ख्यादितेवम् । (धरानिर्धरे)  
अञ्जं डेमकल्पद्रुमं कल्पसेव्यं  
भजे पार्वतीवल्लभं नीलकण्ठम् ॥ ७ ॥

मुनीनां वरेण्यं गुणं रुपवर्णं  
द्विजानं पठन्तं शिवं वेदशास्त्रम् । (द्विजा सम्पठन्तं, द्विजैः स्तूयमानं, वेदशास्त्रैः)  
अढो दीनवत्सं कृपालुं शिवं तं (शिवं ङि)  
भजे पार्वतीवल्लभं नीलकण्ठम् ॥ ८ ॥

सदा भावनाथं सदा सेव्यमानं  
सदा भक्तिदेवं सदा पूज्यमानम् ।  
मया तीर्थवासं सदा सेव्यमेकं (महातीर्थवासम्)  
भजे पार्वतीवल्लभं नीलकण्ठम् ॥ ९ ॥

धृति पार्वतीवल्लभनीलकण्ठाष्टकं सम्पूर्णम् ।

॥ शुभमस्तु ॥

Variations are given in parenthesis on the right side.

NA, PSA Easwaran

---

—  
*Parvati Vallabha Nilakantha Ashtakam*  
pdf was typeset on February 17, 2024  
—

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

